प्रभा खेतान के उपन्यासों में नारी

रंजन.एम.परमार

पीएच.डी स्कोलर

वर्तमान दौर में नारी चेतना, नारी समानता, नारी मुक्ति, नारी अस्मिता की तलाश आदि विषयो को महिला साहित्यकारों ने धड़ल्ले से अपनाया हैं। हिन्दी उपन्यास साहित्य में इन महिला लेखिकाओं का योगदान महत्वपूर्ण हैं। प्रभा खेतान भी इन्ही में से एक हैं जो अपने प्रभावी नारी लेखन के कारण हिन्दी महिला उपन्यासकारो में शीर्ष पर रही हैं । आज भी आर्थिक द्रष्टि से सक्षम होते हुए भी नारी परंपरागत ढाँचे में दबी हुइ अपनी अस्मिता की खोज कर रही हैं। चाहे वह भारत की हो या समृध्ध अमेरिका की हो हर जगह शोषित, पीड़ित ओर अपने अधिकारो के लिए संघर्शील हैं । इन्हीं संघर्ष, शोषण, पीड़ा, उत्पीडन, यातनाओं की अभिव्यक्ति हैं प्रभा खेतान का उपन्यास साहित्य । प्रभाजी के लेखन में स्त्री अपने अस्तित्व की स्थापना करते हुए नजर आती हैं ।

❖ प्रभा खेतान के उपन्यास :

प्रभा खेतान ने अब तक आठ उपन्यासो की रचना की हैं । उन्होनें अपने उपन्यासो में नारी जीवन की त्रासदी , उसकी विड़ंबना , वैश्विक धरातल पर स्त्री के संघर्ष को अभिव्यक्त किया हैं ।

- **आओ पेपे घर चले :**

सन् 1990 में प्रकाशित यह प्रभाजी का पहला उपन्यास हैं । 22 वर्ष की उम्र में जब प्रभाजी ब्युटी थेरापी का कोर्स करने अमेरिका गई उस दौरान हुए अनुभवो को उन्होनें अपने उपन्यास में अभिव्यक्त किया हैं । प्रभाजी ने आइलिन , मिसेज डी, हेल्गा, कैथलिन, मरील, के स्त्री जीवन को प्रस्तुत किया हैं । सदियों से पुरुष व्यवस्था की दकियानूसी मानसिकता का शिकार होती स्त्री जब अपने अधिकार के लिए आवाज उठाती है तो उसे परंपरा, रुढि रिवाजो के तले रौद दिया जाता हैं । यही 70 वर्षीय आइलिन उपन्यास का केन्द्र हैं । जीवन में दो पतियों और पाँच प्रेमीयों के आने के बावजूद अकेलेपन का शिकार होती हैं और ' पेपे ' नामके कुत्ते को अपना बेटा मानकर जीवन व्यतीत करती हैं । जानवर में आदमी और आदमी में जानवर को देखती है आइलिन । आइलिन प्रभा को स्त्री जीवन की सत्यता को बताते हुए कहती है, " दुनिया में एसा कोना बताओं जहाँ औरत के आँसू नहीं गिरे ? "....(1)

चालीस वर्षीय परित्यक्ता मरील अपने जीवन में ठगी गई है वह कहती है," यदि लकीर से हटी तो यह दर्द की पहली कडी है । दुनिया को झेलने के लिए लौह का कवच पहनना होता है । ".....(2)

पति से प्यार करनेवाली एलिजा से प्रभाजी को ज्यादा सहानुभूति हैं । क्लारा ब्राउन के प्यार में अपने पति को पागल देखकर बडी दुखी हो जाती हैं । पुरुष प्रधान समाज ने औरत को कमजोर मानकर उसका शोषण ही किया हैं । एलिजा भी उसीका शिकार हैं , जब विरोध करती है तो उसे तलाक दे दिया जाता हैं । प्रभाजी के मन में कई प्रश्न उठते हैं , आर्थिक रुप से सक्षम होने के बाद भी एलिजा अपना अधिकार क्यों नहीं मागती ? स्वतंत्र विचारोवाली हेल्गा वास्तव में स्त्री को पुरुष के बराबर की जमीन पर खडा करती हैं । हेल्गा सिर्फ

पत्नी और माँ बनकर नहीं रहेना चाहती लेकिन अपनी अलग पहचान बनाना चाहती हैं । प्रभाजी की तरह कैथरिन भी आर्थिक स्वतंत्रता की पक्षधर हैं। कैथलिन प्रभाजी से कहती है , " प्रभा, औरत अभी मनुष्य श्रेणी में नहीं गिनी जाती और तुम अमीर गरीब का सवाल उठा रही हो ? माई स्वीट हार्ट ! हम सब अधॅ मानव है । पहले व्यक्ति तो बनो उसके बाद बात करना । "....(3)

' आओ पेपे घर चले ' उपन्यास स्त्री का आत्मबोध की कहानी हैं । प्रभाजी ने भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर स्त्री जीवन की त्रासदी को प्रस्तुत किया हैं । उषा कीर्ति राणावत के शब्दो में, " प्रभाजी का अमरीकी औरत के जीवन के भयानक सच को उजागर करनेवाला शायद यह पहला हिन्दी उपन्यास है । "....(4)

- **अपने अपने चेहरे :**

1996 में किताबघर नई दिल्ली से प्रकाशित यह उपन्यास प्रभाजी की आत्मकथा का अधूरा अंश हैं । उपन्यास का मुख्य पात्र रमा विवाहित राजेन्द्र गोयनका से प्रेम करती है और दूसरी औरत के रुप में समाज की नज़र में पथभ्रष्ट और अपवित्र हैं । दूसरी औरत का दर्जा पाने वाली रमा अपने अस्तित्व, अपनी पहचान के लिए संघषॅ करती है और परंपरा से चली आ रही मान्यताओं का रमा विरोध करती है और अपने अस्तित्व की तलाश करती हुई समाज के कुंठित रास्तों को त्याज्य मानती हैं । राजेन्द्र की बेटी रीतू 18 वषॅ के शादी शुदा जीवन के बाद घर छोड देती हैं उसके पति कृणाल के जीवन में भी दूसरी औरत है जिसे रीतू बर्दाश्त नहीं करती । ससुराल से कटी हुइ औरत का ना तो समाज स्वीकार करता है ना तो परिवार । अंत में रमा ही रीतू को सहयोग देती है उसको अपनाती है । रमा समाज की स्थापित परंपराओं से

विपरीत चलती हैं । उसे पता है कि समाज इसे स्वीकार नहीं करेगा वह सोचती हैं, " समाज, औरत को केवल संबंधो के माध्यम से जीवीत देखने का आदी हैं । "..... (5)

एक तरफ रमा स्त्री मुक्ति की पक्षधर है वहीं विपरीत ध्रुव पर ख़डी हैं सरला । जो पति से ही अपनी पहचान माननेवाली स्त्री हैं । सदियों से पुरुष ने स्त्री को उपभोग की वस्तु ही माना हैं। चाहे वह अपनी समझीजाने वाली पत्नी हो या दूसरी कही जाने वाली स्त्री । इस उपन्यास में यही स्थिति रूपांकित हुई हैं, " दूसरी औरत की परंपरा ...वह भी तो हजारों साल की हैं ....जैसे ही पुरुष ने विवाह किया होगा वही पहली रात के बाद हर रात उसे एक सी लगी हो । ".....(6)

स्त्री का आत्मनिभॅर होना ही काफी नहीं हैं परंतु मानसिक रुप से भी स्वतंत्र होना होगा । रमा स्त्री की मानसिक स्वतंत्रता पर बल देते हुए करती है, " मुक्ति केवल आर्थिक नहीं होती । जरुरत तो है कि औरत अपनी मानसिक जकड़न से निकले । " .....(7)

संबंध तो स्त्री-पुरुष दोनों से निर्मित होता है ? तो फिर रुढ़ि, रिवाज, नियम सिफॅ स्त्री के लिए ही क्यों ? अकेली रहनेवाली आत्मनिर्भर स्त्री को कई सवालों से गुजरना पड़ता है । इस तरह उपन्यास में एक स्त्री का पत्नि के रुप में शोषण हुआ है और दूसरी औरत के रुप में भी दुखी और पीड़ित दोंनो ही रुप में है । रमा भी समाज की बनायी व्यवस्था को चुनौती देती है और अपनी अस्मिता को बरकरार रखते हुए जीवन में नए प्रतिमान स्थापित करने के साथ साथ समाज के खोखलेपन की ओर इशारा करती हैं ।

- **पीली आँधी :**

सन् 1996 में राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली से प्रकाशित इस उपन्यास में प्रभाजी ने सोमा, पद्मावती, राधाबाई, निमली बाई, लता, कुसुम, रेखा, आदि चरित्रो द्वारा नारी जीवन को प्रस्तुत किया हैं । मारवाडी समाज के अनछुए पहलुओं को प्रस्तुत करते हुए मारवाडी समाज की स्त्रियों की वेदना, शोषण, संघर्ष को उजागर करता हैं । कथा का आरंभ उस काल से होता हैं जब ब्रिटिश शासन था । उपन्यास की कथा का केन्द्रबिंदु राजस्थान के सेठ गुरु मुख दासजी रूंगटा का परिवार हैं । तीन पेढियों की जीवन गाथा प्रस्तुत हुई हैं । उपन्यास की नायिका सोमा आधुनिक स्त्री का प्रतिनिधित्व करती हैं । अपनी जमीन की तलाश करती हुइ सोमा समाज के उन बंधनो का अस्वीकार करती हैं जो स्त्री को अपने हाथो की कटपूतली मानते हैं । अपने अधिकारो के लिए जब भी स्त्री ने आवाज उठाई तब उसे संस्कारो और आदर्शों के जाल में फँसा दिया जाता हैं । एसे आदर्शों के प्रति सोमा आक्रोश व्यक्त करती हुई कहती हैं, -" हां, जब औरत अपने लिए रोती हैं, कुछ मांगती है तब पागल ही कहलाती हैं । ".....(8)

सोमा आत्मविश्वासी और स्वाभिमानी स्त्री हैं । सोमा में त्याग की भावना तो है लेकिन अपने स्वाभिमान की नींव पर त्याग को नकारती हैं । पद्मावती का आहत मन सोमा से कहता हैं ,-" घर की नींव में ईट नहीं होती बेटा । हम स्त्रियों का त्याग होता हैं ।".....(9)

सोमा जितनी निर्भयता से समाज के सामने खुलकर अपने प्यार का स्वीकार करती हैं वहाँ दूसरी तरफ पद्मावती समाज के ड़र से अपने प्यार को स्वीकार

नहीं कर पाती । चित्रा भी स्त्री पक्ष का सशक्त माध्यम के रुप में प्रस्तुत हुई हैं । जब उसे पता चलता हैं कि उसका पति किसी दूसरी स्त्री से प्यार करता हैं तो वह विचलित अवश्य होती हैं लेकिन प्यार से बड़ा आत्मसम्मान होता हैं और वह अपने पति के रास्ते से हट जाती हैं ।

पति माधो की मृत्यु के बाद पद्मावती के जीवन में संघर्ष ओर भी बढ़ जाती हैं । अनमेल विवाह की शिकार थी पद्मावती । पति की मृत्यु के बाद पन्नालाल सुराणा के प्रति मन में जो प्रेम जागा था वे संस्कारों और आदर्शों के तले दब सा गया । लता परिस्थिति को अपने अनुकूल बनाकर जीवन जीनेवाली स्त्री हैं । लता को परिस्थितियों से समझौता मंजूर नहीं हैं अपनी बात को मजबूती से रखने का माद्दा रखती हैं ।

इसतरह पीली आँधी में सोमा, पद्मावती, चित्रा, लता, आदि स्त्री पात्रों के द्वारा स्त्री संघर्ष को प्रस्तुत किया हैं ।

निष्कर्ष :

प्रभाजी के सभी स्त्री पात्र खुद अपनी जमीन का निर्माण करते हैं । प्रभाजी भारतीय ही नहीं बल्कि वैश्विक स्तर पर नारी संघर्ष प्रस्तुत करती हैं । प्रभाजी के उपन्यासों में चित्रित नारी अपने अस्मिता की रक्षा हेतु प्रयत्नशील और नारी स्वतंत्रता की पक्षधर हैं । “आओं पेपे घर चले” की मरील, “अपने अपने चेहरे” की रमा, “पीली आँधी” की सोमा, चित्रा अपने अस्तित्व के प्रति जागृत स्वाभिमानी स्त्रियाँ हैं । प्रभाजी के उपन्यासों के स्त्री पात्र अपनी जिंदगी की जद्दोजहद से जूझते लड़ते नज़र आते हैं ।

संदर्भ :

1. आओ पेपे घर चले, प्रभा खेतान - पृ. - 35
2. आओ पेपे घर चले, प्रभा खेतान - पृ. - 148
3. आओ पेपे घर चले, प्रभा खेतान - पृ. - 24
4. प्रभा खेतान का औपन्यासिक संसार, उषा कीर्ति राणावत - पृ. - 46
5. अपने अपने चेहरे, प्रभा खेतान - पृ. -195
6. अपने अपने चेहरे, प्रभा खेतान - पृ. -102
7. अपने अपने चेहरे, प्रभा खेतान - पृ. -74
8. पीली ऑंधी, प्रभा खेतान - पृ. -256
9. पीली ऑंधी, प्रभा खेतान - पृ. -257